achievement but they also have been sending personal messages of encouragement. What is striking in this acknowledgement of merit at the highest pedestal of the U.S. Administration is that the successive U.S. Presidents have considered it as a serious effort towards academic excellence.

I had a chance to visit a friend of Indian origin in Washington's suburb in January this year. I was puzzled to see in frame, certificates awarded to the youngsters at school by no less a person than the U.S. President, Mr. Bill Clinton, and the U.S. President, Mr. George W. Bush under President's Education Awards Programme. President Bill Clinton's testimonial to one of the kids at the elementary school in the year, 2000 makes a fascinating reading. I quote; "I am heartened to know that exceptional students like you will help lead us in the next century and I encourage you to continue to set high goals and believe in yourself."

I urge the Government of India to devise a method to locate the very brightest students at all stages of learning in the school system and make it possible that the President of India presents awards in recognition of Outstanding Academic Achievement.

Concern over economic imbalance in the rural and Urban areas of the country

श्री पी0 के 0 माहेश्वरी (मध्य प्रदेश): उपसभपति महोदय, मैं आपका ध्यान ग्रामीण व शहरी आबादी के बीच बढ़ती आर्थिक असमानता की ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

महोदय, आर्थिक सुधारों के इस दौर में देश काफी तेज गाति से विकास व आर्थिक सम्पन्नता की राह पर आगे बढ़ रहा है। ऐसे में विकास की मुख्यधारा से देश की बहुसंख्यक ग्रामीण आबादी का पूरी तरह न जुड़ पाना न केवल चिंताजनक है, बल्कि कहीं न कहीं निराशा भी उत्पन्न करता है। जहां एक और शहरी व ग्रामीण आबादी के बीच आर्थिक असमानता काफी ज्यादा है, वहीं दूसरी ओर शैक्षणिक स्तर पर भी असमानता की खाई दिनों –दिन चौडी होती जा रही है। अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद इस असमानता को कम कर पाने में भारत सरकार भी काफी हद तक लाचार ही नज़र आ रही है। केन्द्र सरकार ने वार्षिक घरेलू उपभोग खर्च संबंधी अपना जो सर्वेक्षण जारी किया है, उसके मुताबिक देश की 13 फीसदी ग्रामीण आबादी अपना गुजारा चलाने के लिए महीने में 300 रुपए भी नहीं जुटा पा रही है। साथ ही इस सर्वेक्षण के मुताबिक ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति एक हजार पर 13 लेओग ऐसे है, जिन्हें साल के कुछ महीने भूखे ही रहना पड़ता है। ग्रामीण व शहरी आबादी द्वारा विभिन्न मदों पर खर्च की जाने वाली राशि का विवरण देने वाला यह सर्वेक्षण देश के

आर्थिक विकास की जो तस्वीर प्रस्तुत कर रहा है, वह बेहद ही बदरंग और असमानता से लबरेज़ है। ऐसे में बेहिचक कहा जा सकता है कि इस असमानता को मिटाने के लिए नए सिरे से नीतियों का निर्धारण किए बगैर विकास का उजाला भीड़ के अंतिम आदमी तक पहुंच पाना निहायत ही नामुमकिन है। धन्यवाद ।

SHRI RAMADHAR KASHYAP (Chhattisgarh): Sir, I associate myself with the Special Mention made by Shri P.K. Maheshwari.

Demand for a central legislation to prevent damage to crops being caused by "Neel Gai" in various parts of the country

डा0 प्रभा ठाकुर (राजस्थान)**:** महोदय, देश के विभिन्न राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में रोझ पशु जिसे लोग नील गाय भी कहते हैं, इसके उपद्रव एवं आतंक से देश के लाखों किसानों की नींद हराम है । राजस्थान , हरियाणा, मध्य प्रदेश जैसे कई राज्यों में रोझ पशुओं की संख्या हजारों में, जहां रातभर किसानों के जागकर पहरा देने के बावजूद ये पशु झुंडों में आकर खेत की पूरी फसल को रौंद कर बर्बाद कर देते हैं। अकसर हाई-वे तथा सड़कों पर भी अचानक इनके दौड़ कर वाहनों के सामने आ जाने से अनेक दुर्घटनाएं घटित होती रहती है। नील गाय कहे जाने से भोले किसान धार्मिक भावना के कारण अपने इस शत्रु पशु को समाप्त करने की कोई कार्यवाही भी नहीं कर सकते । रोझ पशु हिरण प्रजाति का पशु है, इसमें गाय का कोई भी लक्षण नहीं है। गाय किसानों को पालती है। जबकि यह उनका संहारक है ।

अतः रोझ पशु के लिए नील गाय का शबद ही शब्द कोष से हटाया जाना चाहिए। इसे किसी भी प्रकार गाय की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता । बकरों के समान निरर्थक और फसलों के लिए नुकसानदेह इस जंगली पशु को , सरकार को वन्य पशु संरक्षण कानून के अंतर्गत न रखते हुए, किसानों को संरक्षण देने के लिए इसे निरर्थक पशु की श्रेणी में रखना चाहिए तथा इस घातक नस्ल को समाप्त करने के लिए आवश्यक प्रयास करने चाहिए। इस दिशा में शीघ्र आवश्यकतानुसार विधेयक ला इस निकम्मे पशु के उत्पाद से देश के किनानों को बचाए जाने की आवश्यकता है।

श्री कमाल अख्तर : महोदय, मैम स्वयं को इससे एशोसिएट करता हूं।

†**श्री अबू आसिम आजमी:** महोदय, मैं भी स्वयं को इससे एसोसिएट करता हूं।

شری ابو عاصم اعظمی: مہودے، میں بھی خودکو اس سے ایسوشی ایٹ کرتا ہوں۔

†**श्री शाहिद सिद्दिकी:** महोदय, मैं भी स्वयं को इससे एसोसिएट करता हूं।

شری شاہد صدیقی: مہودے، میں بھی خودکو اس سے ایسوشی ایٹ کرتا ہوں۔

† Transliteratlon in Urdu Script.